आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:13-09-14

हम बच्चों को इस बेहद की सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देकर, सतयुग का मालिक बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारी यह पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम है, इस पढ़ाई से २१ जन्मो के लिए कमाई का प्रबन्ध हो जाता है.

बाबा हमें दो बात हर मुरली में कहते है - मीठे बच्चे, बाप और वर्से को याद करों. यह भी हम जानते है की बाप को याद करने से आत्मा पवित्र-पावन बनती है और वर्से को याद करने से सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता हैं. हमारी दिव्य बुद्धि जब वर्से को याद करती है तो वर्से को प्राप्त करने के लिए हमारी आत्मा पुरुषार्थ करती है यानी आत्मा पवित्र रहने का और दैवी-गुण धारण करने का पुरुषार्थ करती है. दूसरा जितना हमने सृष्टि चक्र का ज्ञान समझा होगा उतना हम अच्छी तरह से औरो को भी समझा पायेंगे. इसलिए बुद्धि जैसे बार-बार बाप को याद करती है वैसे सारे सृष्टि चक्र को भी बार-बार याद करना चाहिए.

आज सारी मुरली में बाबा ने हमें जितनी बार सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की याद दिलाई उसे फिरसे एक बार पढ़कर याद करेंगे.

- इस समय बाप तुम बच्चों को रुहानी दुनिया में ले जाते हैं. उनको कहा जाता है रुहानी दैवी दुनिया (सतयुग), इसको कहा जाता है जिस्मानी दुनिया.

- बच्चे समझते हैं दैवी दुनिया थी, वह दैवी मनुष्यों की पवित्र दुनिया थी. अभी मनुष्य अपवित्र हैं इसलिए उन पवित्र देवताओं का गायन पूजन करते हैं.

- इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ को कल्पवृक्ष कहा जाता है. सृष्टि के आदि में जब आदि सनातन दैवी-देवता धर्म होता है तो छोटा-सा दैवी झाड़ होता है. फिर उनमें और धर्मों की वृद्धि होती जाती है तो झाड़ बड़ा होता जाता है. झाड़ बढ़ते-बढ़ते अभी कितना बड़ा हो गया है. अभी आदि सनातन दैवी-देवताओं का झाड़ है नहीं और सब टाल-टालियां खड़ी हैं. इस बनेन ट्री का मिसाल, कल्पवृक्ष की आयु अब पूरी होती है.

- अभी तो भक्ति करने के लिए मनुष्य गुरुओं के पास जाते है. कुम्भ के मेले पर कितने ढेर आते हैं. सतयुग में तो यह कुछ भी नहीं होगा. बाबा ने हमें रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान दिया हैं.

- आधाकल्प है ज्ञान, आधाकल्प है भक्ति. ज्ञान से है कमाई, भक्ति से है घाटा. टाइम पर जब घाटे का समय पूरा होता है तो फिर बाप कमाई कराने आते हैं.

- वह है ब्रह्मलोक, निराकारी दुनिया और यह है साकारी दुनिया. हम आत्माये सृष्टि के आदि से उस निराकारी दुनिया से यहाँ साकारी दुनिया में पार्ट बजाने आते हैं. हम आत्माये चैतन्य पार्टधारी हैं. हमें इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान हैं.

- हम जानते है की एक सच्चा बेहद का बाप ही हमें सच बतलाते है जिसे की हम सचखंड के मालिक बन जाते हैं. सच के ऊपर भी सुखमनी में है. सत कहा जाता है - सचखंड (सतयुग) को. वहॉ हम देवताये सदा सच बोलते हैं. हमें सच सिखलाने वाला है बाप.

- यह सारा सृष्टि का चक्र है, ज्ञान और भक्ति का खेल. यह चक्र फिरता ही रहता है. हमेशा कहते भी है ज्ञान, भक्ति और वैराग्य. ज्ञान में है सुख और भक्ति में है दुख. तो पहले है ज्ञान (सतयुग-त्रेता में देवी-देवताओं को सृष्टि चक्र का ज्ञान नहीं होगा पर स्वयं आत्मा है उसका पूरा ज्ञान होगा और इस ज्ञान के आधार पर ही वह सुखी रहते है) फिर है भक्ति (द्वापर-कलियुग में मनुष्य भक्ति करते है, उनको ना सृष्टि चक्र का, ना स्वयं का ज्ञान होता है). अभी हम जानते है की जब भक्ति से दुखी होते है तो फिर हम ब्राह्मण भक्ति से वैराग्य करते है और ईश्वरीय ज्ञान को धारण करते हैं.

- सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की आत्मा और शरीर दोनों सतोप्रधान होते है. यहाँ कलियुग के अन्त में हमारी आत्मा और शरीर दोनों तमोप्रधान बन जाते हैं. अब बाप आकर हमारी आत्मा को वापस सतोप्रधान बनाते हैं. भले यहॉ आत्मा पवित्र बनती है, परन्तु शरीर फिर भी अपवित्र रहता है जब तक आत्मा की कर्मातित अवस्था हो. यह सारा ज्ञान अब हमारी बुद्धि में हैं. ॐ शांति.